



Sample

25 Mar 2026

01:35 PM

Delhi

Model: Web-MyKundli

Order No: 121708801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: **25/03/2026**
दिवस _____: बुधवार
जन्म समय _____: **13:35:00** कला
इष्ट _____: 18:08:01 घटी
स्थान _____: **Delhi**
देश _____: India

अक्षांश _____: 28:39:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:21:08 कला
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 कला
स्थानिक वेल _____: 13:13:52 कला
वेलान्तर _____: -00:06:00 कला
साम्पातिक वेल _____: 01:25:04 कला
सूर्योदय _____: 06:19:47 कला
सूर्यास्त _____: 18:34:59 कला
दिनमान _____: 12:15:12 कला
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वसन्त
सूर्याचे अंश _____: 10:27:41 मीन
लग्नाचे अंश _____: 06:19:50 कर्क

अवकहडा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कर्क - चन्द्र
राशि-स्वामी _____: मिथुन - बुध
नक्षत्र-चरण _____: मृगशिरा - 4
नक्षत्र स्वामी _____: मंगळ
योग _____: सौभाग्य
करण _____: वणिज
गण _____: देव
योनि _____: सर्प
नाडी _____: मध्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मांजर
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: की-किशोर
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मेष

पंचांग

आजोबांचें नांव _____ :
बडीलांचे नांव _____ :
आईचें नांव _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	माह	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1948	चैत्र	4
पंजाबी	संवत : 2082	चैत्र	12
बंगाली	सन् : 1432	चैत्र	10
तमिल	संवत : 2082	पांगुनी	11
केरल	कोल्लम : 1201	मिनम	11
नेपाली	संवत : 2082	चैत्र	11
चैत्रादी	संवत : 2083	चैत्र	शुक्ल 7
कार्तिकादी	संवत : 2083	चैत्र	शुक्ल 7

पंचांग

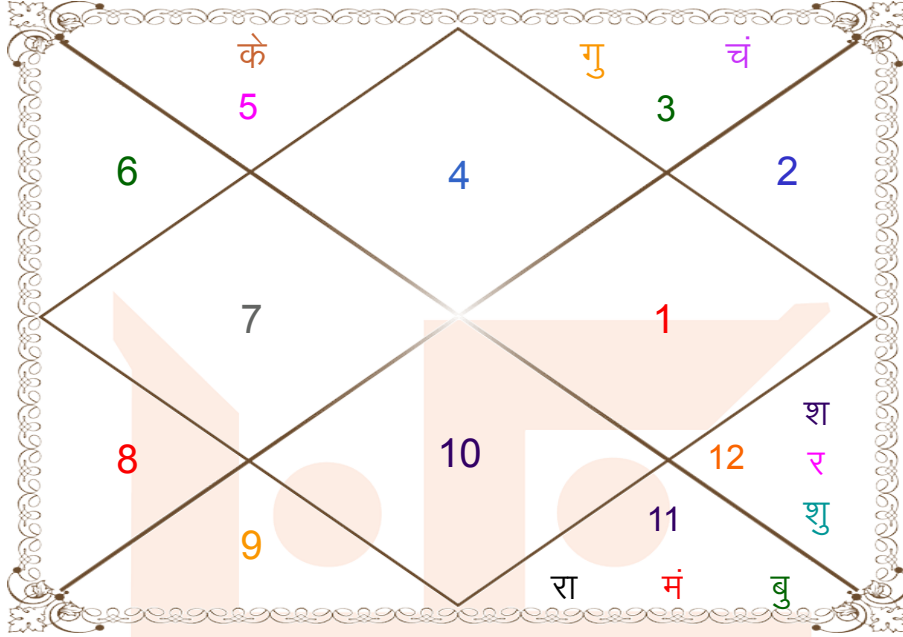
सूर्योदय समयी तिथि _____ : 7
तिथि समाप्ति वेळ _____ : 13:50:18
जन्म तिथि _____ : 7
सूर्योदय समयी नक्षत्र _____ : मृगशिरा
नक्षत्र समाप्ति वेळ _____ : 17:33:22 कला
जन्म योग _____ : मृगशिरा
सूर्योदय समयी योग _____ : सौभाग्य
योग समाप्ति वेळ _____ : 27:09:16 कला
जन्म योग _____ : सौभाग्य
सूर्योदय समयी करण _____ : वणिज
करण समाप्ति वेळ _____ : 13:50:18 कला
जन्म करण _____ : वणिज
भयात _____ : 46:15:34
भभोग _____ : 56:11:29
भोग्य दशा वेळ _____ : मंगळ 1 वर्ष 2 मा 23 दि

घात चक्र

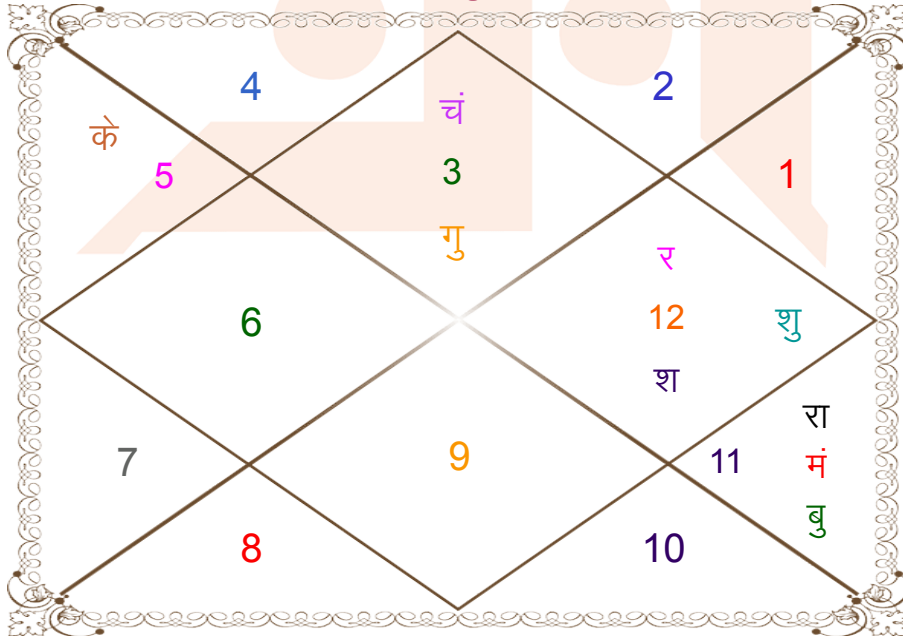
मास _____ : आषाढ
तिथि _____ : 2-7-12
दिवस _____ : सोमवार
नक्षत्र _____ : स्वाति
योग _____ : परिघ
करण _____ : कौलव
प्रहर _____ : 3
वर्ग _____ : उंदीर
लग्न _____ : कर्क
रवि _____ : मीन
चन्द्र _____ : कुम्भ
मंगळ _____ : मेष
बुध _____ : मकर
गुरु _____ : वृषभ
शुक्र _____ : मिथुन
शनि _____ : कुम्भ
राहु _____ : कर्क

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

श र शु		चं गु
रा मं बु		ल के

लग्न कुण्डली

गु चं		शु श रा मं बु
ल		
के		

विंशोत्तरी
मंगळ 1वर्ष 2मा 23दि
मंगळ

25/03/2026

18/06/2140

मंगळ	18/06/2027
राहु	17/06/2045
गुरु	17/06/2061
शनि	17/06/2080
बुध	17/06/2097
केतु	18/06/2104
शुक्र	18/06/2124
रवि	19/06/2130
चन्द्र	18/06/2140

योगिनी
संकटा 1वर्ष 4मा 26दि
संकटा

25/03/2026

21/08/2027

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	25/03/2026
सिद्धा	21/08/2027

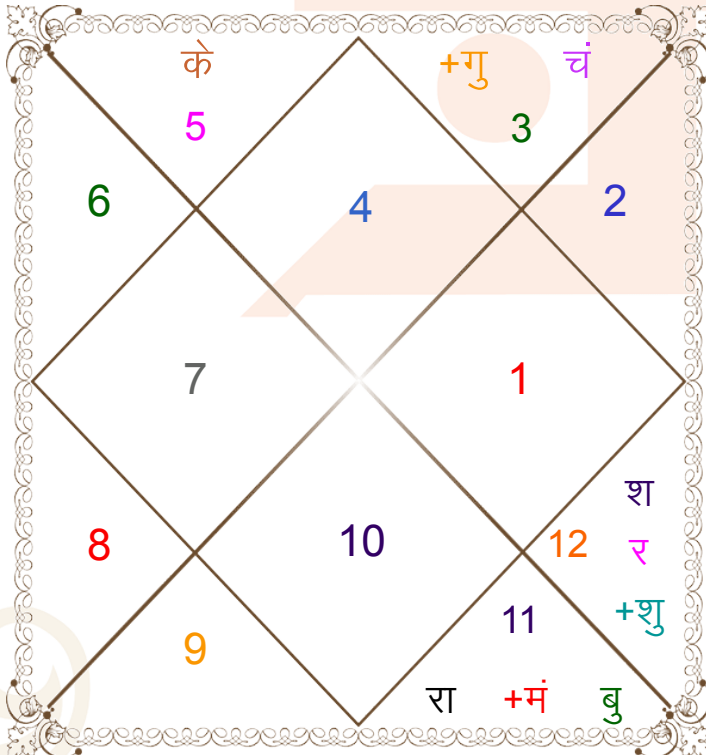
ग्रह स्पष्ट तथा त्यांची स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कर्क	06:19:50	307:05:57	पुष्य	1	8	चंद्र	शनि	बुध	---
सूर्य			मीन	10:27:41	00:59:28	उ.भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	सूर्य	मित्र राशि
चंद्र			मिथु	04:19:17	14:11:03	मृगशिरा	4	5	बुध	मंगळ	शुक्र	मित्र राशि
मंगळ	अ		कुंभ	23:40:20	00:47:05	पू.भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	शनि	सम राशि
बुध			कुंभ	15:12:51	00:24:17	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	केतु	सम राशि
गुरु			मिथु	21:11:13	00:02:43	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	गुरु	शत्रु राशि
शुक्र			मीन	29:11:56	01:14:07	रेवती	4	27	गुरु	बुध	शनि	उच्च राशि
शनि	अ		मीन	10:29:30	00:07:29	उ.भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	सूर्य	सम राशि
राहु	व		कुंभ	14:29:08	00:00:46	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	केतु	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	14:29:08	00:00:46	पू.फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष			वृष	04:15:33	00:02:22	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	शनि	---
नेप			मीन	07:43:38	00:02:16	उ.भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	केतु	---
प्लूटो			मक	10:52:26	00:01:08	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	चंद्र	---
दशम भाव			मीन	28:45:56	--	रेवती	--	27	गुरु	बुध	शनि	--

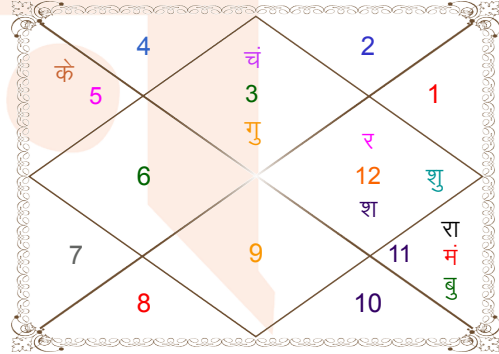
व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

लाहिरी अयनांश : 24:13:31

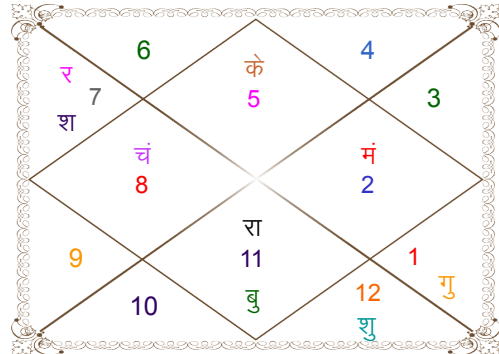
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मिथुन 20:04:11	कर्क 06:19:50
2	कर्क 20:04:11	सिंह 03:48:32
3	सिंह 17:32:53	कन्या 01:17:14
4	कन्या 15:01:35	कन्या 28:45:56
5	तुला 15:01:35	वृश्चिक 01:17:14
6	वृश्चिक 17:32:53	धनु 03:48:32
7	धनु 20:04:11	मकर 06:19:50
8	मकर 20:04:11	कुम्भ 03:48:32
9	कुम्भ 17:32:53	मीन 01:17:14
10	मीन 15:01:35	मीन 28:45:56
11	मेष 15:01:35	वृषभ 01:17:14
12	वृषभ 17:32:53	मिथुन 03:48:32

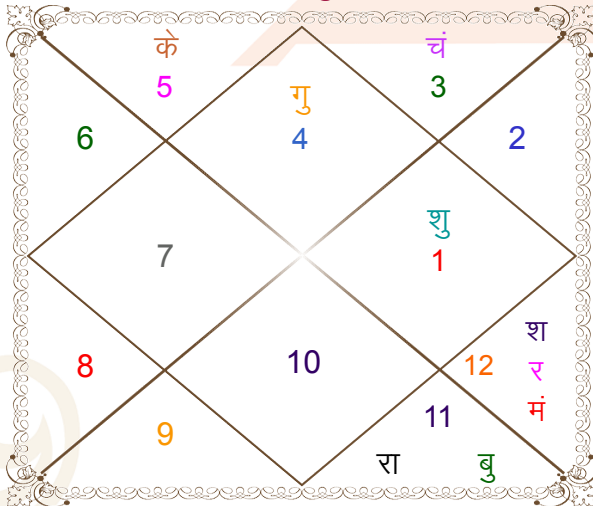
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कर्क	06:19:50
2	कर्क	29:45:55
3	सिंह	26:57:53
4	कन्या	28:45:56
5	वृश्चिक	03:03:24
6	धनु	06:08:44
7	मकर	06:19:50
8	मकर	29:45:55
9	कुम्भ	26:57:53
10	मीन	28:45:56
11	वृषभ	03:03:24
12	मिथुन	06:08:44

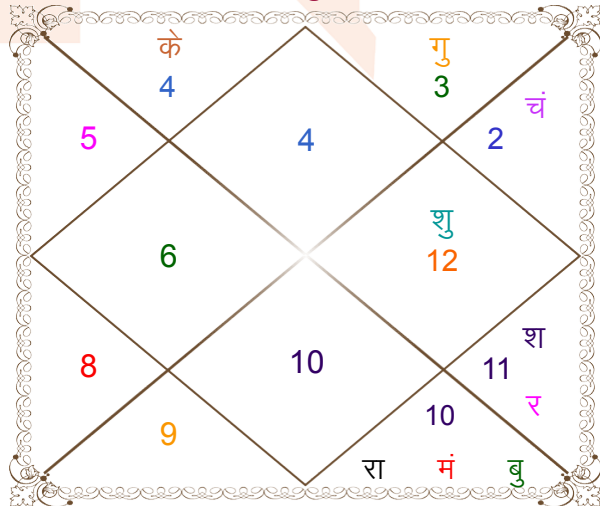
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण
धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा वेल : मंगळ 1 वर्ष 2 महिना 23 दिवस

मंगळ 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
25/03/2026	18/06/2027	17/06/2045	17/06/2061	17/06/2080
18/06/2027	17/06/2045	17/06/2061	17/06/2080	17/06/2097
00/00/0000	राहु 28/02/2030	गुरु 05/08/2047	शनि 20/06/2064	बुध 14/11/2082
00/00/0000	गुरु 24/07/2032	शनि 16/02/2050	बुध 28/02/2067	केतु 11/11/2083
00/00/0000	शनि 31/05/2035	बुध 24/05/2052	केतु 08/04/2068	शुक्र 11/09/2086
00/00/0000	बुध 17/12/2037	केतु 30/04/2053	शुक्र 09/06/2071	सूर्य 18/07/2087
00/00/0000	केतु 04/01/2039	शुक्र 30/12/2055	सूर्य 21/05/2072	चंद्र 17/12/2088
25/03/2026	शुक्र 04/01/2042	सूर्य 17/10/2056	चंद्र 20/12/2073	मंगळ 14/12/2089
शुक्र 12/07/2026	सूर्य 29/11/2042	चंद्र 16/02/2058	मंगळ 29/01/2075	राहु 02/07/2092
सूर्य 17/11/2026	चंद्र 30/05/2044	मंगळ 23/01/2059	राहु 05/12/2077	गुरु 08/10/2094
चंद्र 18/06/2027	मंगळ 17/06/2045	राहु 17/06/2061	गुरु 17/06/2080	शनि 17/06/2097

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगळ 7 वर्ष
17/06/2097	18/06/2104	18/06/2124	19/06/2130	18/06/2140
18/06/2104	18/06/2124	19/06/2130	18/06/2140	00/00/0000
केतु 13/11/2097	शुक्र 19/10/2107	सूर्य 06/10/2124	चंद्र 19/04/2131	मंगळ 14/11/2140
शुक्र 14/01/2099	सूर्य 18/10/2108	चंद्र 06/04/2125	मंगळ 18/11/2131	राहु 03/12/2141
सूर्य 21/05/2099	चंद्र 19/06/2110	मंगळ 12/08/2125	राहु 19/05/2133	गुरु 09/11/2142
चंद्र 20/12/2099	मंगळ 19/08/2111	राहु 07/07/2126	गुरु 18/09/2134	शनि 18/12/2143
मंगळ 19/05/2100	राहु 18/08/2114	गुरु 25/04/2127	शनि 18/04/2136	बुध 15/12/2144
राहु 06/06/2101	गुरु 18/04/2117	शनि 06/04/2128	बुध 18/09/2137	केतु 13/05/2145
गुरु 13/05/2102	शनि 18/06/2120	बुध 10/02/2129	केतु 19/04/2138	शुक्र 26/03/2146
शनि 22/06/2103	बुध 19/04/2123	केतु 18/06/2129	शुक्र 18/12/2139	00/00/0000
बुध 18/06/2104	केतु 18/06/2124	शुक्र 19/06/2130	सूर्य 18/06/2140	00/00/0000

- ❖ वरील दशा चन्द्रमा चे अंशा चे आधार वर्ती दिलेली आहे. भयात भभोग चे आधार अनुसार दशाच्या भोग्यकाल मंगळ 1 वर्ष 2 मा 25 दि होता आहेत.
- ❖ वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते. विंशोत्तरी दशा पूर्ण 120 वर्षाची बिना आयुर्निर्णय दिलेली आहे.

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगळ - शुक्र		मंगळ - सूर्य		मंगळ - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु	
25/03/2026		12/07/2026		17/11/2026		18/06/2027		28/02/2030	
12/07/2026		17/11/2026		18/06/2027		28/02/2030		24/07/2032	
00/00/0000	सूर्य	18/07/2026	चंद्र	04/12/2026	राहु	13/11/2027	गुरु	25/06/2030	
00/00/0000	चंद्र	29/07/2026	मंगळ	17/12/2026	गुरु	23/03/2028	शनि	11/11/2030	
00/00/0000	मंगळ	05/08/2026	राहु	18/01/2027	शनि	26/08/2028	बुध	15/03/2031	
00/00/0000	राहु	25/08/2026	गुरु	15/02/2027	बुध	13/01/2029	केतु	05/05/2031	
00/00/0000	गुरु	11/09/2026	शनि	21/03/2027	केतु	12/03/2029	शुक्र	28/09/2031	
25/03/2026	शनि	01/10/2026	बुध	20/04/2027	शुक्र	23/08/2029	सूर्य	11/11/2031	
शनि	18/04/2026	बुध	19/10/2026	केतु	03/05/2027	सूर्य	11/10/2029	चंद्र	23/01/2032
बुध	17/06/2026	केतु	26/10/2026	शुक्र	07/06/2027	चंद्र	01/01/2030	मंगळ	14/03/2032
केतु	12/07/2026	शुक्र	17/11/2026	सूर्य	18/06/2027	मंगळ	28/02/2030	राहु	24/07/2032
राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य	
24/07/2032		31/05/2035		17/12/2037		04/01/2039		04/01/2042	
31/05/2035		17/12/2037		04/01/2039		04/01/2042		29/11/2042	
शनि	04/01/2033	बुध	09/10/2035	केतु	08/01/2038	शुक्र	06/07/2039	सूर्य	21/01/2042
बुध	01/06/2033	केतु	03/12/2035	शुक्र	13/03/2038	सूर्य	30/08/2039	चंद्र	17/02/2042
केतु	01/08/2033	शुक्र	06/05/2036	सूर्य	01/04/2038	चंद्र	29/11/2039	मंगळ	08/03/2042
शुक्र	21/01/2034	सूर्य	22/06/2036	चंद्र	03/05/2038	मंगळ	01/02/2040	राहु	26/04/2042
सूर्य	14/03/2034	चंद्र	07/09/2036	मंगळ	26/05/2038	राहु	14/07/2040	गुरु	09/06/2042
चंद्र	09/06/2034	मंगळ	01/11/2036	राहु	22/07/2038	गुरु	08/12/2040	शनि	31/07/2042
मंगळ	09/08/2034	राहु	20/03/2037	गुरु	11/09/2038	शनि	30/05/2041	बुध	16/09/2042
राहु	12/01/2035	गुरु	22/07/2037	शनि	11/11/2038	बुध	01/11/2041	केतु	05/10/2042
गुरु	31/05/2035	शनि	17/12/2037	बुध	04/01/2039	केतु	04/01/2042	शुक्र	29/11/2042
राहु - चंद्र		राहु - मंगळ		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध	
29/11/2042		30/05/2044		17/06/2045		05/08/2047		16/02/2050	
30/05/2044		17/06/2045		05/08/2047		16/02/2050		24/05/2052	
चंद्र	14/01/2043	मंगळ	21/06/2044	गुरु	29/09/2045	शनि	30/12/2047	बुध	13/06/2050
मंगळ	15/02/2043	राहु	18/08/2044	शनि	31/01/2046	बुध	09/05/2048	केतु	31/07/2050
राहु	08/05/2043	गुरु	08/10/2044	बुध	21/05/2046	केतु	02/07/2048	शुक्र	16/12/2050
गुरु	20/07/2043	शनि	08/12/2044	केतु	05/07/2046	शुक्र	03/12/2048	सूर्य	27/01/2051
शनि	14/10/2043	बुध	31/01/2045	शुक्र	12/11/2046	सूर्य	19/01/2049	चंद्र	06/04/2051
बुध	31/12/2043	केतु	22/02/2045	सूर्य	21/12/2046	चंद्र	06/04/2049	मंगळ	24/05/2051
केतु	01/02/2044	शुक्र	27/04/2045	चंद्र	24/02/2047	मंगळ	30/05/2049	राहु	25/09/2051
शुक्र	02/05/2044	सूर्य	16/05/2045	मंगळ	11/04/2047	राहु	15/10/2049	गुरु	14/01/2052
सूर्य	30/05/2044	चंद्र	17/06/2045	राहु	05/08/2047	गुरु	16/02/2050	शनि	24/05/2052

शुभाशुभ ज्ञान

शुभाशुभ ज्ञान करण्याची आपणास आपल्या मित्र व शत्रुविषयी बोध करते. मूलांक, भाग्यांक व, मित्रांकद्वारे मैत्री व भागीदारी करण्यात फायदा होईल, त्याच प्रमाणे शुभ दिवस व शुभवर्ष प्रगतिकारक ठरेल, शुभग्रहांची, दशा सुद्धा लाभकारक धरते, मित्रलग्न व मित्रराशि लाभदायक अस्ते.

शुभरत्न व धातु तसेच रंग धारण केल्याने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य लाभते, भाग्य रत्न धारण केल्याने भाग्यवृद्धि होते. शुभ वेली कोणत्याही कार्याचा आरम्भ केल्याने अपेक्षित यश मिलते. इष्टदेव-देवतांचे ध्यान व जप केल्याने मानसिक शक्ति वाढते व यश लवकर मिलते. शुभ पदार्थ, अन्न, द्रव्य इत्यादि चे दान केल्याने ही शुभफल मिलते. व्यापार-उद्योग शुभ दिशेला केल्यास त्यात भरभराट होउन अपेक्षित लाभ होतो. शुभ-अशुभ ज्ञानाचा प्रयोग दैनंदिन जीवनात शुभफलदायी ठरतो.

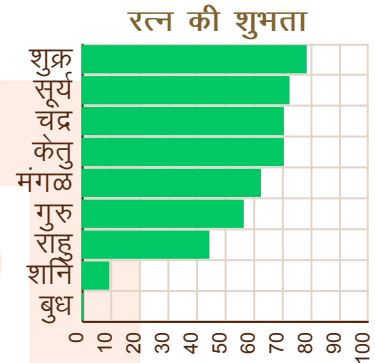
मूलांक	7
भाग्यांक	2
मित्र अंक	2, 3, 6, 7
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिवस	मंगळ, सोम, गुरु
शुभ ग्रह	मंगळ, चन्द्र, गुरु
मित्र राशि	कन्या, कुम्भ
मित्र लग्न	तुला, मीन, वृषभ
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	मोती
शुभ उपरत्न	चन्द्रमणि
भाग्य रत्न	पुष्कराज
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	पीला
शुभ दिशा	पश्चिमोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	शंख, कपूर, श्वेतचन्दन
दान अन्न	तांदुल
दान द्रव्य	दही

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लगनों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	78%	भाग्योदय, धनार्जन, सुख
माणिक्य	सूर्य	72%	भाग्योदय, धन
मोती	चंद्र	70%	कम खर्च, स्वास्थ्य
लहसुनिया	केतु	70%	धन, भाग्योदय
पोवले	मंगळ	62%	दुर्घटना पासून सुरक्षा, व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
पुष्कराज	गुरु	56%	कम खर्च, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
गोमेद	राहु	44%	दुर्घटना, नेष्ट भाग्य
नीलम	शनि	9%	नेष्ट भाग्य, दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना
पन्ना	बुध	0%	दुर्घटना, व्यय, पराक्रम हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	पोवले	पन्ना	पुष्कराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
मंगळ	18/06/2027	78%	77%	75%	0%	62%	78%	9%	19%	77%
राहु	17/06/2045	59%	58%	50%	0%	56%	84%	22%	59%	58%
गुरु	17/06/2061	78%	77%	69%	0%	69%	66%	9%	44%	70%
शनि	17/06/2080	59%	58%	50%	0%	56%	84%	34%	53%	58%
बुध	17/06/2097	78%	58%	62%	0%	56%	84%	9%	44%	70%
केतु	18/06/2104	59%	58%	69%	0%	56%	84%	0%	19%	83%
शुक्र	18/06/2124	59%	58%	62%	0%	56%	91%	22%	53%	77%
सूर्य	19/06/2130	84%	77%	69%	0%	62%	66%	0%	19%	58%
चंद्र	18/06/2140	78%	83%	62%	0%	56%	78%	9%	19%	58%

साडेसाती विषयी माहिती

गोचर शनि जेव्हां कुंडलीतील चंद्राला बारावा, पहिला व दूसरा येईल, तेव्हा साडेसाती सुरु होते. कुंडलीतील चंद्राला गोचर शनि चौथा व आठवा आला असता, ढैय्या म्हणजे अडीचकी सुरु होते. साडेसाती चा प्रभाव साडेसात वर्ष व ढैय्या चा प्रभाव अडीच वर्षे मानला गेला आहे साडेसाती चा प्रभाव सामान्यापणे शारिरीक, मानसिक व आर्थिक त्रासाचा जातो तर काहीवेळप आश्चर्यचकित प्रगतिही या कालात होते.

सामान्यापणे मनुष्याच्या जीवनात साडेसाती तीन वेला एते- पहिल्यांदा बालपणि, दूसऱ्यांदा तरुणपणि व तीसऱ्यांदा म्हातारपणि. पहिल्या साडेसाती चा प्रभाव शिक्षण व आई-वडिलावर पडतो. दुसऱ्या साडेसाती चा प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति व कुटुंबावर पडतो. तिसऱ्या साडेसाती चा प्रभाव शारिरीक आरोग्यावर पडतो.

खाली दिलेल्या कोष्टकवरून साडेसाती चा काल व प्रत्येक अडीचकी (ढय्या) चे शुभाशुभ फलासंबंधीची माहिती समजू शकेल.

प्रथम चक्र:

साडेसातीचा पहला चरण	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-----
साडेसातीचा दूसरा चरण	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
साडेसातीचा तीसरा चरण	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
चतुर्थस्थान चरण	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
अष्टमस्थान चरण	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	-----

द्वितीय चक्र:

साडेसातीचा पहला चरण	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	-----
साडेसातीचा दूसरा चरण	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साडेसातीचा तीसरा चरण	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
चतुर्थस्थान चरण	30/08/2068-04/11/2070	-----	-----
अष्टमस्थान चरण	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	-----

तृतीय चक्र:

साडेसातीचा पहला चरण	18/07/2088-31/10/2088	05/04/2089-19/09/2090	25/10/2090-21/05/2091
साडेसातीचा दूसरा चरण	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	-----
साडेसातीचा तीसरा चरण	02/07/2093-18/08/2095	-----	-----
चतुर्थस्थान चरण	11/10/2097-02/05/2098	20/06/2098-26/12/2099	17/03/2100-16/09/2100
अष्टमस्थान चरण	25/02/2108-29/07/2108	23/11/2108-17/02/2111	-----

शनि चा ढैया फल

ढैया चा प्रकार

साडेसातीचा पहला चरण
साडेसातीचा दूसरा चरण
साडेसातीचा तीसरा चरण
चतुर्थस्थान चरण
अष्टमस्थान चरण

फल

शुभ
अशुभ
अशुभ
शुभ
शुभ

क्षेत्र

धनार्जन
कम खर्च
बुरा स्वास्थ्य
पराक्रम
दम्पति

साडेसाती वर उपाय

शनि च्या साडेसाती दरम्यान होणार्या अशुभ प्रभावांची तीव्रता कमी होना साठी दान, पूजन व्रत, मंत्रोच्चार आदि उपाय आहेत. शनिवारी काली काम्बल, काली उडद, काले-तिल, कालयारंगाची चर्मची चप्पल, काले कापड, लोखंडाचे दान करावे. शनिदेवाची पूजा, दर्शन व शनिवार चा उपवास करावा उपावास च्या दिवशी फले उडद चा खाध वस्तु, हरभरे, बेसन, काले तिल, काले मीठ या वस्तुंचेच सेवन करावे पाईजे. स्वतः किंवा योग्य गुरुजीकडून खालील शनिमंत्रचा 19000 जप करुन ध्यावा.

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ॥

शनि चा साडेसातीत शारीरिक, मानसिक व कौटुंबिक शान्ति आणि समृद्धि, आर्थिक सुदृढता व अंगीकृत कार्यात प्रगति होण्या साठी खालील महामृत्युंजय मंत्रचा 125000 जप स्वतः करावा किंवा योग्य पुरोहिताकडून करवून ध्यावा.

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥**

किंवा खालील मंत्रचा कमीत कमी 108 वेला जप करावों.

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ॥

साडेसाती च अशुभत्व कमी करुन शुभत्व वाढवण्या साठी 5-1/4 रत्ती वजना च नीलम रत्न पंचधातु उजव्या हाताचा मधल्या बोटात धारण करावे. घोडायाच्या नालेची किंवा बोटीच्या कीलची अंगठी मधल्या बोटात वापरवी.

अंगठी किंवा पेन्डन्ट शुक्ल पक्षा चा शनिवारी सायंकाली सूयदृस्ता चा अर्धातास पूवदृ धारण करावी. पुष्य, अनुराधा किंवा उत्तरा भाद्रपदा या नक्षत्र पैकी जे नक्षत्र शनिवारी असेल त्या दिवशी अंगठी धारण करावी. अंगठी धारण करण्या पूवदृ शुद्ध निरसे दूध व गंगाजलानें अंगठीस अभिषेक करावा. धूप-दीप लावून पूजा करावी व खालील मंत्र 108 वेला जपून अंगुठी धारण करावी.

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगठी धारण केल्या नंतर शनि च्या वस्तूंचे दान करावे या मुले शनिचा अशुभ परिणामांची तीव्रता कमी होईल व आपल्या सुख-शान्ति-समृद्धि ची वाढ होईल.

मांगलिक विचार

जेहवा वर किंवा कन्या ची कुंडलीत मंगळ, लग्न चतुर्थ, सप्तम, तसेच द्वादश भाव असेल तेहवा असे जातक मंगळ दोषी होतात.॥ यथोक्तम्॥ लग्ने व्यये च पातले जामित्रे चाष्टमे कुजे. स्त्री भर्तुविनाशाय भर्तुः पत्नी विनाशयेत्. मांगळिक दोष लग्न पासून जास्ती प्रबल होतात, पण चंद्रमा पासून यांचा दोष कम आहे. जर शस्त्रनुसार वर आणि कन्या चा मांगळिक दोष भंग होतात तर यांचे दम्पती जीवन सुखी आणि प्रसन्नता युद्ध होणार. यांचे विपरीत बगैर दोष भंग झाले, मांगळिक वर कन्या ला जीवनां चे अनेक अनावश्यक त्रास तसेच अडचणांचे सामना होणार. अतः विवाहा पूर्वी शुद्ध कुंडली मिलान करून हा दोष उचित निवारण करून दांपत्य जीवन शुरु कराय ला पहिजे. ज्यापासून जीवनात शान्ती तसेच संपन्नता होणारी.

तुमचे जन्म समय मध्ये मंगळ जन्म कुंडलीत अष्टम भाव मध्ये स्थित आहे अतः आपण एक मांगळिक पुरुष आहे पण तुमची कुंडलीत शास्त्रनुसार मंगळी दोष भंग होतात. अतः तुम्हाळा हा अशुभ फळापेक्षा शुभ फळ जास्ती देणार. ह्याचे शारीरिक स्वास्थ्य चांगला जीवनात सर्व शुभ आणि महत्वपूर्ण कार्य संपन्न होणार, पण कधी मधीं बायको चा स्वास्थ्य प्रभावित होणार. पण कोणी त्रास नाय होणार यांचे सह शुभ प्रभाव पासून उत्तम शिक्षण करणारे आणि भाउ-ताई चा पूर्ण सुख मिळेल. तुमचा सम्पूर्ण जीवन सुख सौभाग्य आणि ऐश्वर्य युद्ध होणार. यद्यपि हा मंगळ तुमचा साठी शुभ असेल पण यांचा प्रभाव पासून विवाह काही उशीर होउ सकतात, पण विवाह सुखी वातावरण मध्ये संपन्न होणार. तसेच या मध्ये काही प्रकाराची अडचणे आणि विघ्ना चा सामना नाय होणार विवाह नंतर जीवन सुखी रहणार कधीं काही बायको चा स्वास्थ्य प्रभावित होणार. पण तुमचे सर्व कार्य संपन्न होणारे, ज्या मुळे आपण जीवनात पूर्ण सुख तसेच आनंद ची अनुभूति करणारे. तुमचे कुंडलीत मंगळ अष्टम भावात स्थित आहे अतः तुमचे सर्व सांसारिक व्यापारिक तसेच कौटुम्बिक कार्य निर्विघ्न संपन्न होणारे तसेच सर्व कार्य मध्ये सफळता प्राप्त होणारी. एकादश भावात मंगळ ची दृष्टि पासून तुमचे फायदे चा रस्ता मजबूत होणार. तसेच जीवनात आर्थिक स्थिति पण मजबूत रहणारी. द्वितीय भावात मंगळ दृष्टि होण्या मुळे आपण उच्च शिक्षण प्राप्त करणारे तसेच कधीं-मधीं कार्या ला अडचणे होणारी कुटुम्बिक जीवन सुखी आणि शांत रहणार. तृतीय भावात मंगळ दृष्टि होण्या मुळे भाऊ ताई युद्ध रहणारे आणि यांचे सुख सहयोग प्राप्त होणारे. अतः हा मंगळ चा प्रभाव आहे या पासून आपल्या जीवन सुख आणि सौभाग्य युद्ध व्यतीत करणारे. आपले दांपत्य जीवन ला जास्ती सुखी ठेवाय आणि आनंद पूर्ण बनवय साठी तुम्हाळा कोणी पण असी कन्या बरोबर विवाह कराय ला पाहिजे ज्यांचा मंगळ दोष भंग होतात असी कन्या बरोबर विवाह झाला तर दांपत्य जीवन फार सुखी आणि सौभाग्य पूर्ण होणार. जन्म कुंडली मिलान समया वर जर अष्टम भावात मंगळ असेल तर असा विवाह शुभ नाय होतात. इतर भावात मंगळ शुभ फळ देणार तसेच दांपत्य जीवन सुखी होणार. अतः समझून आखेर निर्णय करायला पाहिजे नंतर विवाह करायला पाहिजे.

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में कर्कोटक नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक को भाग्योदय होने में आंशिक रूप से व्यवधान उपस्थित हो जाता है। नौकरी में थोड़ा बहुत रुकावट आती है या कभी पदावनति होने का भय होता है। प्रायः जातक को पैतृक सम्पत्ति का मनोवांछित लाभ नहीं मिलता है। व्यापारादि कार्यों में थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है और विशेष परिश्रम करने के बावजूद भी उसका सही फल प्राप्त नहीं होता है। कामों में स्थिरता प्रायः नहीं आ पाती।

इस योग के प्रभाव से जातक अपने मित्रों के द्वारा कभी थोड़ा बहुत छले जाते हैं। जिस कारण जातक को नुकसान उठाना पड़ता है। कभी जातक के शरीर में रोग व्याधि ग्रसित कर लेती है तथा आंशिक रूप में मानसिक परेशानी घेरे रहती है। जातक को कुटुम्ब से अपयश मिलता है एवं आत्मीय परिजनों से सम्मान नहीं मिलता है।

इस योग के कारण जातक को अपनी वाणी पर नियन्त्रण नहीं रहता एवं वाणी कभी-कभी दूषित हो जाती है। परिणामस्वरूप जातक का स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। बात-बात पर लड़ाई-झगड़े करने को भी तैयार हो जाता है और जातक को आंशिक रूप से आर्थिक नुकसान होता है तथा उधार में दिया हुआ पैसा प्रायः डूब ही जाता है। जातक को कभी शस्त्राघात का भय होता है। जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे षड्यन्त्र रचते रहते हैं, परन्तु अपने षड्यन्त्र में वे कभी सफल नहीं होते। जातक को अकाल मृत्यु का भय बना रहता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।

12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- रवि नवम् भाव में स्थित है तथा उस पर शनि का प्रभाव है।
- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- लग्नेश द्वादश भाव में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में रवि, चन्द्र, मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान

करें।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

नवमभाव में सूर्य होतो जातक साहसी, ज्योतिषी, नेता सदाचारी, तपस्वीयोगी, वाहनसुख, भृत्यसुख एवं पिता के लिए अशुभ होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्प्रिय, कोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।

मिथुन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, अध्ययनशील, सुन्दर, रतिकुशल, भोगी, मर्मज्ञ, नेत्र चिकित्सक, अच्छा वक्ता एवं अच्छा अन्तर्ज्ञान वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत्त होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोड़कर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

मंगल

आठवेंभाव में मंगल हो तो जातक व्याधिस्त, व्यसनी, मद्यपायी, कठोरभाषी, उन्मत्त, नेत्ररोगी, शस्त्रचोर, संकोची, अग्निभीरु, धनचिन्ता युक्त एवं रक्तविकारयुक्त होता है।

कुम्भ राशि में मंगल हो तो जातक व्यसनी, लोभी, सटटे से धननाशक, आचारहीन, मत्सरवृत्ति एवं बुद्धिहीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे प्रायः युक्त रहेंगे एवं यथाशक्ति जीवन में आपको अपना सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे। साथ ही यदा कदा आप उनसे विशेष रूप से आर्थिक सहयोग भी प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपका साथ देंगे तथा अपनी ओर से कोई भी कष्ट नहीं होने देंगे।

आप भी उनको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी सहायता करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह तनाव अस्थायी रहेगा एवं शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। जीवन में आप सभी विषम परिस्थितियों में सर्वदा उनकी अपनी ओर से वांछित सहायता प्रदान करते रहेंगे।

बुध

अष्टमभाव में बुध हो तो जातक दीर्घायु, अभिमानी, राजमान्य, कृषक, लब्धप्रतिष्ठ, मानसिक दुखी, कवि, वक्ता, न्यायाधीश, मनस्वी, धनवान् एवं धर्मात्मा होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

गुरु

द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, योगाभ्यासी, परोपकारी, उदार, आलसी, सुखी, मितव्ययी, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, लोभी, यात्री एवं दुष्ट चित्तवाला होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

नवम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजप्रिय, पवित्रतीर्थ यात्राओं का कर्ता, दयालु, प्रेमी, गृहसुखी, गुणी, चतुर एवं आस्तिक होता है।

मीन राशि में शुक्र हो तो जातक जौहरी, शिल्पज्ञ, जमीन्दार, अच्छा और हास परिहास का स्वभाव, विद्वान, लोकप्रिय, शान्त, धनी, कार्यदक्ष, कृषिकर्म का मर्मज्ञ, शिष्ट और सभ्य सम्मानित एवं आराम तलब होता है।

शनि

नवम भाव में शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

अष्टम भाव में राहु हो तो जातक क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी, पुष्टदेही एवं गुप्तरोगी होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

द्वितीय भाव में केतु हो तो जातक अस्वस्था, कटुवचन बोलने वाला, मुंह के रोग, राजभीरु एवं विद्रोही होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

दशा विश्लेषण

**महादशा :- मंगल
(25/03/2026 - 18/06/2027)**

मंगल की महादशा को 25/03/2026 आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 18/06/2027 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल अष्टम भाव में स्थित है। इसके पहले आपकी 10 वर्ष की चन्द्रदशा चल रही थी। आपको लाभ, इच्छाओं की पूर्ति तथा भौतिक समृद्धि की प्राप्ति हुई होगी। इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति का लाभ और पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है तथा आपके अच्छे स्वास्थ्य की संभावना है।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आप में जीवनी शक्ति और उत्साह होगा। अपनी सभी इच्छाओं की पूर्ति के लिए आप में आवश्यक कर्मशक्ति तथा ऊर्जा होगी। मौसम में परिवर्तन के कारण आपका स्वास्थ्य एक सीमा तक प्रभावित हो सकता है। आँख तथा मूत्राशय संबंधी समस्याओं, सरदर्द, ज्वर आदि की सम्भावना है। कुछ घाव तथा चोट आ सकती है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आप धनोपार्जन अपने प्रयासों से करेंगे। पैतृक सम्पत्ति, तथा ट्रस्ट से आय, बोनस या अवकाश ग्रहण से लाभ की सम्भावना है। आपका बैंक बैलेंस सुदृढ़ होगा। आपको कहीं से अचानक धन की प्राप्ति होगी। जीविका के लिए सशस्त्र सैन्य सेवा, इन्जीनियरिंग, सर्जरी के कार्य, लोहा-इस्पात से सम्बन्धित व्यवसाय आदि का चयन कर सकते हैं। रसायन, समुद्री उत्पाद, कुटीर उद्योग आदि का व्यापार उत्तम होगा। आप एक सफल दन्त चिकित्सक या सर्जन हो सकते हैं। नौकरीपेशा लोगों की छोटी यात्राएं होंगी, उन्हें कठिन परिश्रम करना होगा और उनकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपका चिर प्रतीक्षित स्थानान्तरण या परिवर्तन होगा। व्यवसाय व्यापार से जुड़े लोगों की आय में वृद्धि होगी। हर प्रकार का लाभ प्राप्त होगा। व्यापार में उन्नति होगी और आय में वृद्धि होगी। अप्रत्याशित परिवर्तन तथा विकास की सम्भावना है जो अन्ततः लाभदायक होगा। मार्केटिंग तथा जन-सम्पर्क कौशल उत्तम होगा और आप अपने क्षेत्र में बहुत अच्छा करेंगे।

वाहन, यात्रा, सम्पत्ति :

गुरु की अन्तर्दशा में आपको वाहन तथा पारिवारिक सुख मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप छोटी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के फलस्वरूप लम्बी यात्राएं होंगी। मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको जमीन-जायदाद की प्राप्ति होगी। आपको पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। सम्पत्ति की दृष्टि से यह एक उत्तम दशा है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा में कुछ परिवर्तन हो सकता है। विज्ञान, लेखा, र्थतिकी, गणित आदि में आपकी रुचि होगी। आपका शोध की ओर झुकाव होगा और आप इस दशा के दौरान अपनी

परियोजना पूरी करेंगे। आपकी खेलों तथा अन्य बाहरी गतिविधियों में रुचि होगी। उच्च शिक्षा के लिए यह दशा उत्तम है। आपका दाखिला आपकी पसन्द की संस्थाओं में होगा।

परिवार :

परिवार में आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपके बच्चे अच्छा करेंगे और आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी की आय और लाभ में वृद्धि होगी। आपको आपके जीवन साथी से लाभ होगा। जीवन साथी के साथ आपका संबंध उत्तम रहेगा। आपकी माता के लिए निवेश व सहा लाभदायक तथा समृद्धिदायक होगा। आपके पिता का अच्छे कार्य में व्यय होगा, उनकी यात्रा होगी और साझीदारी में लाभ मिलेगा। आपके छोटे भाई-बहनों को विरोधियों पर विजय मिलेगी, कार्य स्थान में स्थिति सुधरेगी और स्वास्थ्य तथा जीवन शक्ति में सुधार होगा। आपके बड़े भाई-बहनों के कार्यों में कुछ परिवर्तन होगा। इस दशा के दौरान आप में पहलशक्ति बहुत होगी और आपका खिंचाव पर विज्ञान की ओर होगा।

अन्तर्दशा :

मंगल की मुख्य दशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको सम्पत्ति तथा अचानक धन की प्राप्ति होगी। इसके बाद आने वाली राहु दशा के कारण कुछ समस्याएं आएंगी। गुरु आराम व सुख देगा और आपका विवाह भी हो सकता है। शनि के फलस्वरूप आपको बच्चों से सुख मिलेगा और कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न होंगी। बुध की अंतरदशा के फलस्वरूप आपको यश और ख्याति, सम्पत्ति, समृद्धि, उच्च प्रतिष्ठा तथा उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति होगी। केतु कुछ तनाव उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको आराम, विलासिता, सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति होगी और आपकी यात्रा होगी जबकि सूर्य के कारण लम्बी यात्राएं होंगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप हर प्रकार का लाभ मिलेगा।

**अंतर्दशा :- मंगल - शुक्र
(25/03/2026 - 12/07/2026)**

आपके लिए मंगल की महादशा 25/03/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अन्तर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 25/03/2026 को प्रारंभ होकर 12/07/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आप जीवनसाथी, संतान और मित्रों से सुख पाएंगे। प्रसिद्धि और धन का संकेत है। कुछ यात्राएं हो सकती हैं। सरकार से सहयोग मिलेगा। ज्ञानार्जन के लिए समय शुभ है। विज्ञापन जगत में सफलता मिल सकती है। अध्यात्म में रुचि होगी। भाई-बहनों से संबंध मधुर रहेंगे। ललित कला, नाटक आदि में रुचि होगी। उत्साह से परिपूर्ण रहेंगे।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता को सम्मान, प्रसिद्धि, उच्चपद, धन और सुखद घरेलू जीवन का संकेत है। माता का स्वास्थ्य उत्तम होगा ; शत्रुओं पर विजय होगी। आपके भाई-बहनों को साझेदारी से लाभ होगा, विवाह हो सकता है, विभिन्न साधनों से धनलाभ होगा, इच्छाएं पूर्ण होंगी। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी ; परीक्षा में सफल होंगे। अगर वे सेवारत हैं तो धनी बनेंगे; निवेश से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो तरक्की करेंगे; सहकर्मियों से मधुर संबंध होंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं; यात्राएं हो सकती हैं। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए लक्ष्मीजी की आराधना करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - सूर्य
(12/07/2026 - 17/11/2026)**

आपकी मंगल की महादशा 25/03/2026 को प्रारंभ हो रही है। मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 12/07/2026 को प्रारंभ होकर 17/11/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आपका भाग्य उत्तम होगा, धनी बनेंगे। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। उच्चशिक्षा के लिए प्रवेश मिल सकता है। शिक्षा से संबंधित यात्राएं संभव हैं। दूरस्थ स्थान की यात्रा हो सकती है। ज्योतिषियों और दार्शनिकों के लिए समय शुभ है। अध्यात्म में रुचि रहेगी।

आपके जीवनसाथी को व्यापार में लाभ होगा, उच्चपद प्राप्त होगा, सुविधाएं उत्तम रहेंगी। आपके पिता को सफलता और उन्नति मिलेगी। माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, खुशी मिलेगी, विरोधी परास्त होंगे और धनलाभ होगा। भाई-बहनों की आकांक्षाओं की पूर्ति होगी, वांछित स्थान पर तबादला होगा, विवाह और व्यापार में लाभ संभव है। आपकी संतान की शिक्षा पूर्ण होगी, इच्छाओं की पूर्ति होगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अगर आप सेवारत हैं तो उन्नति,

**महादशा :- राहु
(18/06/2027 - 17/06/2045)**

राहु की महादशा 18/06/2027 को आरम्भ और 17/06/2045 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु अष्टम भाव में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि द्वितीय भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको यश, ख्याति, शत्रुओं पर विजय तथा स्वास्थ्य की मामूली समस्या हुई होगी। राहु की वर्तमान दशा में आपको विरोधियों पर विजय, उत्तम स्वास्थ्य, सेवा में लाभ, यश और



ख्याति मिलेगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सक्रिय तथा स्फूर्तिवान होंगे। किन्तु आपको सतर्क रहना चाहिए और किसी तरह की अति नहीं करनी चाहिए, अन्यथा आपको स्नायविक थकावट होगी। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको चर्मरोग, पेट में अल्सर की समस्या, बुखार आदि हो सकते हैं। इनमें से अधिकांश से थोड़ी सी सतर्कता बरत कर बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको आपके जीवन साथी के साझेदारों से लाभ मिलेगा। आपको पैतृक सम्पत्ति, ग्रैच्यूइटी, सेवा-निवृत्ति से लाभ आदि की प्राप्ति भी होगी। अप्रत्याशित अचानक लाभ भी हो सकता है। आपको सट्टे में भी लाभ हो सकता है। जीविका और व्यवसाय के लिए विमान विज्ञान, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, शिक्षण, कम्प्यूटर विज्ञान, विमान-चालन, वायु-सैनिक, लेखन बीमा एजेन्ट आदि के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। कपड़ा, रत्न, चमड़ा, कागज, टेलीफोन आदि का व्यापार लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना होगा। सहकर्मियों, सहायकों और वरिष्ठ अधिकारियों का रुख आपके प्रति सख्त होगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों को समृद्धि तथा अर्थ प्राप्ति के अनेक अवसर मिलेंगे। आपके मित्र आपकी सहायता को तत्पर रहेंगे।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

शनि की अन्तर्दशा में आपको जीवन में आराम मिलेगा। आपको अचानक धन, पैतृक सम्पत्ति मिलेगी। वाहन से लाभ और आराम की संभावना है। शनि की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी। विदेश यात्रा भी हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। शोध-परियोजना की ओर आपका झुकाव होगा। विज्ञान, गणित, कम्प्यूटर विज्ञान, इन्जीनियरिंग, लेखा-कार्य, वाणिज्य-लेखन आदि में आपकी रुचि होगी। बौद्धिक कार्यों से संबद्ध विषयों में आप अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार में आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चे अच्छा करेंगे और उन्हें लाभ तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपके जीवनसाथी को सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और आपको साझेदार से लाभ मिल सकता है। आपकी माता को सट्टे में लाभ तथा सुख मिलेगा और आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी जबकि आपके पिता को स्वास्थ्य की मामूली समस्या, यात्रा तथा अनावश्यक व्यय होगा। आपके छोटे भाई-बहनों को शत्रुओं पर विजय और नौकरी में स्थिति अनुकूल होगी जबकि बड़े भाई-बहनों के जीवन में उन्नति, सम्पत्ति की प्राप्ति तथा लम्बी यात्रा होगी।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के दौरान आपके जीवन में परिवर्तन, अचानक लाभ तथा स्वास्थ्य की मामूली समस्या होगी। गुरु की अन्तर्दशा में सम्पत्ति तथा सन्तान-सुख की प्राप्ति, शिशु का जन्म और शिक्षा उत्तम होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान शिक्षा से सम्बद्ध कुछ समस्या, भवन-सुख तथा छोटी यात्रा होगी। बुध की अन्तर्दशा में हर प्रकार का लाभ और विरोधियों पर विजय मिलेगी। केतु कुछ समस्या उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान विवाह, साझेदारी से लाभ तथा लम्बी यात्रा होगी। सूर्य की अन्तर्दशा में जीवन में प्रगति, यश, ख्याति और सफलता मिलेगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में सम्पत्ति और समृद्धि जबकि मंगल की अन्तर्दशा में सफलता, सम्पत्ति, जीवन में उन्नति, यश और ख्याति मिलेगी।



**अंतर्दशा :- राहु - राहु
(18/06/2027 - 28/02/2030)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 18/06/2027 को प्रारंभ होकर 17/06/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 18/06/2027 को प्रारंभ होकर 28/02/2030 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। अष्टम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के द्वितीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप झगड़ालू हो सकते हैं जिससे हर प्रकार से हानि हो सकती है ; अतः सावधान रहना आवश्यक है। स्वास्थ्य दुर्बल हो सकता है; व्याधि से पीड़ित हो सकते हैं। समाज में सम्मान में कमी आ सकती है, जिससे मन दुखी रह सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में अपने इष्टदेव की उपासना के बाद बायें हाथ की मध्यमा अंगुली में गंगाजल और कच्चे दूध से धोकर धारण करें।

**अंतर्दशा :- राहु - गुरु
(28/02/2030 - 24/07/2032)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 18/06/2027 को प्रारंभ होकर 17/06/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 28/02/2030 को प्रारंभ होकर 24/07/2032 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। द्वादश भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 4, 6, 8 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप धर्म के आलोचक हो सकते हैं; पापकर्म में रुचि हो सकती है। अय्याशी का जीवन व्यतीत कर सकते हैं, जिससे बाद में पछताना पड़ सकता है।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बृहस्पति के तांत्रिक मंत्र के 76000 जाप करें।